लेखा·योग

131. स्वैच्छिक संगठनों का वित्तीय जवाबदेही - 3

Oct-06/ रा.आश्विन १९२८: Released: नवम्बर 2008

Accountaid™
Accounting for Aid. Aid in Accounting

इस अंक में

जवाबदेही का भविष्य • रुझान पृष्ठ 1

जवाबदेही का व्यावसायिक मॉडल पृष्ठ 2

भूलभुलैया पृष्ठ 4

लेखा योग 130 से आगे...

जवाबदेही का भविष्य

पिछले 30 सालों में एनपीओ क्षेत्र की अहमियत और असर, दोना. ें में इजाफा हुआ है। आम लोगों, राजनेताओं और उद्योगों, सभी में गैर-सरकारी संगठनों के प्रति जागरूकता बढ़ी है। आज स्थिति यह है कि एनजीओ क्षेत्र की राय-सलाह पर ध्यान दिए बिना किसी सामा. जिक या आर्थिक मुद्दे पर संवाद नहीं हो सकता।

रुझानँ

जैसे-जैसे परोपकार की व्यवस्था ज़्यादा संगठित और विशेषज्ञता पर आधारित होती जा रही है, वैसे- वैसे दातव्य संस्थाओं और लाभार्थियों के बीच फासला बढ़ता जा रहा है। बहुत सारे नए जन सेवी संगठन विश्वस्तरीय पहुंच हासिल कर चुके हैं। स्थिति यह है कि दुनिया के एक हिस्से में इकट्ठा होने वाला पैसा किसी और हिस्से में खर्च होता है। कभी- कभी इन दोनों हिस्सों के बीच हजारों मीलों का फासला हो सकता है। इस तरह की स्थिति, निगरानी के लिहाज से, खास तरह की समस्या पैदा कर देती है।

दूसरी गौर करने वाली बात यह है कि एनजीओ क्षेत्र दिन-प्रतिदिन 'कॉरपोरेट' ढांचे में ढलता जा रहा है। कहने का मतलब यह है कि अब यह क्षेत्र या इसकी संस्थाएं किसी वास्तविक व्यक्ति के प्रति जवाबदेह नहीं होतीं। अब यह क्षेत्र एक सोच या एक मिशन के प्रति जवाबदेह है। यह स्थिति एक व्यावसायिक कंपनी जैसी है जो कुछ खास व्यावसायिक लक्ष्यों को ध्यान में रखकर चलती है।

अब व्यावसायिक कंपनियों और एनपीओ के बीच फर्क सिर्फ लाभ केंद्रित दृष्टि और लाभों के वितरण पर सिमट कर रहा गया है।

इस तरह की संरचना और उसका विकास जवाबदेही संबंधी मुद्दों के लिए एक उपजाऊ जमीन मुहैया कराता है। कई बार समाज के ऐसे तबकों की नकारात्मक प्रतिक्रिया भी सामने आती है, जो जन सेवी संगठनों के काम से प्रभावित हो रहे हैं। ताकतवर राजने. ताओं, कारोबारियों या सांस्कृतिक हितों की नुमाइंदगी करने वाले ये तबके, अकसर जन सेवीसंगठनों पर पलट कर वार करते हैं । इसके लिए वे वित्तीय जवाबदेही को अपना सबसे बड़ा हथियार बना लेते हैं।

जैसे-जैसे परोपकार की व्यवस्था ज़्यादा संगठित और विशेषज्ञता पर आधारित होती जा रही है, वैसे- वैसे दातव्य संस्थाओं और लाभार्थियों के बीच फासला बढ़ता जा रहा है। बहुत सारे नए जन सेवी संगठन विश्वस्तरीय पहुंच हासिल कर चुके हैं।

www.AccountAid.net

लेखा·योग
131. स्वैच्छिक संगठनों का वित्तीय जवाबदेही - 3 Oct-06/आश्विन १९२८: Released: सितम्बर 2008

इनके समानांतर कंसल्टेंटों, वकीलों, विश्लेषकों और विभिन्न मंत्रालयों की लंबी कतार होती है जो समय आने पर विभिन्न मामलों में सहायता प्रदान करते हैं।

जवाबदेही का व्यावसायिक मॉडल

दुनिया भर में व्यावसायिक कंपनियां तरह-तरह के अंकुशों और नियंत्रणों में काम करती हैं। इनका मकसद शेयरधारकों के हितों और सरकारी राजस्व की रक्षा करना होता है।

ये नियंत्रण निर्देशक मंडल से शुरू होतो है जो लेखांकन और वित्त टीम पर नज़र रखते हैं। आमतौर पर आंतरिक ऑडिट टीम की बागडोर भी इसी निर्देशक मंडल के हाथों में होती है।

नियंत्रण का अगला स्तर स्वतंत्र ऑडिटरों द्वारा किए जाने वाले ऑडिट के रूप में होता है। ऑडिटर ज़िम्मेदारी भरा आचरण करें, इस बात को सुनिश्चित करने के लिए उन पर एक सरकारी लेखांकन संस्था के जरिए नज़र रखी जाती है। भारत में आईसीएआई1 यह काम करती है। ऐसी संस्थाएं वित्तीय परिणामों में किसी तरह की धांधली को रोकने के लिए लेखांकन और उनके प्रकटीकरण की रूपरेखा और मानक भी तय करती हैं।

सेबी2 या एसईसी3 जैसी नियमन संस्थाएं भी इस व्यवस्था पर नज़र रखती हैं। इनके अलावा कंपनी अधिनियम, 1956जैसे ताकतवर कानून होते हैं जिनके क्रियान्वयन पर कंपनी विधि बोर्ड और कंपनी रजिस्ट्रार आदि नज़र रखते हैं।

इनके समानांतर कंसल्टेंटों, वकीलों, विश्लेषकों और विभिन्न मंत्रालयों की लंबी कतार होती है जो समय आने पर विभिन्न मामलों में सहायता प्रदान करते हैं।

इतनी विस्तृत और परिष्कृत व्यवस्था होने के बावजूद व्यावसायिक जवाबदे. ही जानकारों के बीच अभी भी हंसी का विषय बना हुआ है। और यह कोई नई बात नहीं है।

ये नियंत्रण निर्देशक मंडल से शुरू होतो है जो लेखांकन और वित्त टीम पर नज़र रखते हैं। आमतौर पर आंतरिक ऑडिट टीम की बागडोर भी इसी निर्देशक मंडल के हाथों में होती है।

accountable-subscribe@topica.com

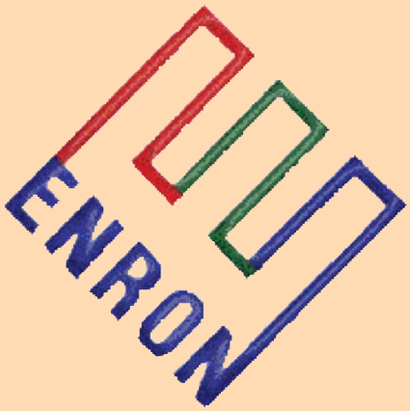

एनरॉन कॉरपोरेशन की स्थापना 1985 में टैक्सास, अमेरिका में की गई थी लेकिन इसकी जड़ें 1930 के दशक में ही बनने लगी थीं। 2001 में यह कंपनी अपने शिखर पर थी। उसमें 20,000 से ज़्यादा लोग काम करते थे और उसका कारोबार दुनिया भर में फैला हुआ था। कंपनी का दावा था कि उसकी सालाना आय 111 अरब डॉलर (यानी तकरीबन 50 खरब रुपए) थी। फॉर्च्यून ने लगातार 6 साल तक उसे 'अमेरिका की सबसे रचनाशील कंपनी' का दर्जा दिया था।

इस कंपनी की ज़्यादातर रचनाशीलता उसकी लेखांकन पद्धति में थी। जैसा कि 2001 में निवेशकों ने पाया, एनरॉन अपने घाटों को विदेशी सहायक कंपनियों के मत्थे मढ़कर अपने नतीजों को लगातार बढ़ा-चढ़ा कर पेश कर रही थी। इन घाटों को मुख्य कंपनी के खातों में नहीं दर्शाया जाता था। इसी कारण से उसके शेयर 90 डॉलर (4,000 रुपए) से गिरकर रातोंरात 30 सेंट (13 रुपए) पर आ गए।

एनरॉन के निर्देशकों पर खातों में जानबूझ कर हेराफेरी के आरोप में मुकदमा चलाया गया और उन्होंने अपनी जेब से भारी-भरकम जुर्माने अदा करके जैसे-तैसे अपनी जान छुड़ाई। इस रहस्योद्घाटन की वजह से दुनिया की चार सबसे बड़ी ऑडिट कंपनियों में शामिल होने वाली, ऑर्थर एंडर्सन ऑडिट कंपनी, भी इतिहास का हिस्सा बन गई।

भारत में भी एनरॉन एक जाना-माना नाम है। कई साल पहले कंपनी ने महाराष्ट्र राज्य विद्युत बोर्ड के साथ 3 अरब डॉलर का एक समझौता किया था। बाद में पता चला कि इस सौदे में भी कंपनी ने जम कर घूस दी थी और अनुबंधहासिल करने के लिए राजनीतिक दबाव का खुलकर सहारा लिया था। लेकिन भारत ही अकेला ऐसा देश नहीं है जहांऐसा हुआ हो। भारत के अलावा, दक्षिण अमे. रिका, अफ्रीका, फिलीपींस में एनरॉन और विवादों का चोली-दामन का साथ रहा है।

व्यंगात्मक रुप से, एनरॉन का ही नारा था 'पूछो, क्यों?'। यानी कंपनी चाहती थी कि लोग सवाल उठाएँ, जाँच-पड़तालकरें। ज़ाहिर है कि न तो कंपनी के ऑडिटर, जो की दुनिया के सबसे बड़े ऑडिटरों में से एक थे, कभी इस नारे से प्रभावित हुए और न ही एनरॉन के 600 कार्यकारिणियों ने कभी यह सवाल पूछा। शायद वे किसी अलग ही धुन पर थिरक रहे थे :

... "लाइट ब्रिगेड आगे बढ़ो!"
क्या एक भी था जो दुखी हुआ?
हालांकि सिपाहियों को मालूम न था कि
किसी ने गड़बड़ी कर दी है :
उनका काम जवाब देना न था,
उनका काम तर्क करना न था,
उनका काम तो था बस मरना और मारना :
और यूं, मौत की घाटी में
600 रणबांकुरे जा समाये...।

- चार्ज ऑफ दि लाइट ब्रिगेड,
लॉर्ड एल्फ्रेड टेनिसन, 1854

लेखा·योग

131. स्वैच्छिक संगठनों का वित्तीय जवाबदेही - 3 Oct-06/आश्विन १९२८: Released: सितम्बर 2008

Accountaid™
Accounting for Aid. Aid in Accounting

भूलभुलैया

जहां से निकलने का कोई रास्ता न हो

यूनानी परंपराओं में भूलभुलैया की अपनी एक खास जगह रही है। क्रीट के राजा 'मिनोस' ने अपने शत्रु, 'मिनोतोर' को कैद करने के लिए भूलभुलैया बनवाई थी। कहते हैं कि वह भूलभुलैया इतनी चालाकी से बनाई गई थी कि उसका रचनाक. ार भी खुद बड़ी मुश्किल से ही बाहर निकल पाया था! दुनिया की पहली भूलभुलैया यूनानियों ने मोइरीज झील के पास 1800 ईसा पूर्व में बनवाई थी। 1176 ईसवी में सम्राटहेनरी द्वितीय ने, अपनी रानी रोज़मुंड क्लिफर्ड की हिफ़ाज़त के लिए, वुडस्टॉक में एक भूलभुलैया बनवाई थी। लखनऊके इमामबाड़े में मुगलों के ज़माने की एक भूलभुलैया है।

भूलभुलैया हमेशा सिर्फ ईंटों से नहीं बनती। अभिमन्यु जिस चक्रव्यूह में फंस गया था, वह योद्धाओं और रथों से बनी घेरेदार भूलभुलैया थी। अभिमन्यु उसमें प्रवेश करना तो जानता था लेकिन निकलना उसके पिता अर्जुन को ही आता था।

हालाँकि आजकल नौकरशाही भूलभुलैया का जमाना है और यकीन मानिए आज के दौर में अगर अर्जुन भी होते तो वेभी इस भूलभुलैया से निकल पाने में अपने को असमर्थ पाते!

स्रोत : www.wikipedia.org; ब्रेवर्स डिक्शनरी ऑफ फ्रेज ऐण्ड फेबल्स; महाभारत।

लेखा योग क्या है:

'लेखा-योग' के प्रत्येक अंक में एनजीओ नियमन या लेखांकन से संबंधित किसी खास मुद्दे को उठाया जाता है और इसे 5,000 गैर-सरकारी संगठनों, एजेंसियों और ऑडिट कंपनियों को भेजा जाता है। अगर कार्यशालाओं या एनजीओ न्यूजलैटर्स में गैर-व्यावसायिक कामों के लिए 'लेखा-योग' का पुनर्प्रकाशन या वितरण किया जाता है तो अकाउंटएड को कोई एतराज नहीं है बशर्ते आप इस बात का उल्लेख कर दें कि आपने यह सामग्री 'लेखा-योग' से ली है।

अंगेजी में लेखा-योग:

लेखा-योग अंग्रेजी में 'अकाउंटेबल' के नाम से उपलब्ध है।

कानून की व्याख्या:

यहां कानून की जो व्याख्या दी गई है वह काफी सामान्य स्तर पर है। कोई भी अहम फैसला लेने से पहले अपने सलाहकारों से बात ज़रूर करें।

इंटरनेट पर लेखा-योग:

'लेखा-योग' के कुछ चुने हुए अंक हमारी वेबसाइट - **www.AccountAid.net.** पर उपलब्ध हैं। लेखायोग के नए अंकों की अपलोडिंग के बारे में ई-मेल से जानकारी हासिल करने के लिए **lekhayog-subscribe@topica.com.** पर एक ई-मेल भेजें। इसके बाद पुष्टि के लिए टॉपिका आपको एक मेल भेजेंगी। अपनी सदस्यता चालू करवाने के लिए इस मेल का उत्तर अवश्य दें।

अकाउंटएड कैप्सूल:

इसमें एनजीओ लेखांकन और इससे जुड़े मुद्दों से संबंधित जानकारियां दी जाती हैं। इसकी सदस्यता लेने के लिए **accountaid-subscribe@topica.com**. पर ई-मेल भेजें। इसके बाद पुष्टि के लिए टॉपिका आपको एक मेल भेजेंगी। अपनी सदस्यता चालू करवाने के लिए इस मेल का उत्तर अवश्य दें।

इंटरनेट पर आपके खाते:

आपके खातों का सार-संकलन करके उन्हें इंटरनेट पर प्रकाशित किया जा सकता है। इसके अलावा उन्हें आप अपनी सालाना रिपोर्ट में भी शामिल कर सकते हैं। इस के उदाहरण **www.AccountAid.net**. पर देखें। और ज़्यादा जानकारी के लिए **accountaid@gmail.com** पर हमें लिखें।

सवाल और स्पष्टीकरण?

अकाउंटएड एनजीओ लेखांकन या वित्तीय नियमन से जुड़े सवालों पर गैर-सरकारी संगठनों और उनके ऑडिटर्स को सलाह देता है। आप भी अपने सवाल ई-मेल या खत के जरिए हमसे पूछ सकते हैं। आप चाहें तो फोन पर भी हमसे बात कर सकते हैं।

टिप्पणियां:

आप अपनी टिप्पणियां और सुझाव अकाउंटएड इंडिया, 55 बी, पॉकेट सी, सिद्धार्थ एक्सटेंशन, नई दिल्ली - 110014 पर भेज सकते हैं। हमारा फोन नंबर है 011-26343128; फोन/फैक्स : 011-26343852;
ई-मेल: **accountaid@gmail.com**

© अकाउंटएड इंडिया विक्रम संवत २०६५ कार्तिक, ईस्वी सन् नवम्बर 2008.

श्री अनिल बरनवाल द्वारा अकाउंटएड इंडिया, नई दिल्ली, फोन 26343128 के लिए मुद्रित एवं प्रकाशित तथा प्रिंटवर्क्स, नई दिल्ली, फोन 26811689, 9810653101 से मुद्रित। लेख: श्री संजय अग्रवाल; अनुवाद: श्री योगेन्द्र दत्त
सम्पादन: कु. संचिता चक्रबर्ती; डिज़ाइन: श्रीमती मोऊशुमी डे
केवल निजी प्रसार के लिए।
tYT/rAB,IA/sAB,SC/cAB,SC/eSC/cdSA

accountaid@gmail.com